भली लगे या बुरी
बात कहे ख़री

संस्थापक- बाबू सिंह चौहान

चिंगारी
सांध्य दैनिक

श्रम, संघर्ष, सेवा और साधना के

40 वर्ष

श्रम, संघर्ष, सेवा और साधना के 40 वर्ष

40 साल यानि 4 दशक की अनवरत यात्रा को अगर 4 शब्दों में व्यक्त करूं, तो वे हैं- श्रम, संघर्ष, सेवा और साधना। इन 40 वर्षों में कोई एक दिन याद नहीं आता, जब खुद को तपाये बिना भोजन नसीब हुआ हो, और बिना किसी दुश्वारी के सहजता के साथ चिंगारी छपा हो। कभी आर्थिक समस्या, तो कभी तकनीकी प्रॉब्लम। कभी कार्मिकों की अनुपलब्धता, तो कभी विरोधियों के षडयंत्र। फिर भी हम चलते रहे...बिना थके, बिना रूके। नमन उन सब चरणों में, जो इस यात्रा में हमारे साथ कदम से कदम मिलाकर चले। पाठकों का आभार व्यक्त करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। थैंक्यू, आभार या धन्यवाद कहकर मैं उस रिश्ते को छोटा नहीं करना चाहता, जो पाठकों और चिंगारी का है। बड़े कहे जाने वाले अखबार भी तरसते हैं ऐसे अटूट रिश्ते के लिये। हजारों पाठक ऐसे हैं, जो पहले दिन से चिंगारी पढ़ते आ रहे हैं और अब उनकी दूसरी, तीसरी पीढ़ी इस रिश्ते को परवान चढ़ा रही है। बहुत कम अखबार ऐसे होंगे, जिन्हें पहले दिन ही पाठकों का ऐसा प्यार मिले कि प्रतियां कम पड़ जायें। चिंगारी की तो डमी कॉपी भी बिक गई थी, जिस पर साफ-साफ लिखा था- 'यह प्रति बिक्री के लिये नहीं'। चिंगारी को यह भी गौरव हासिल है कि उसने पाठकों के साथ-साथ विज्ञापनदाताओं का भी भरोसा जीता है। विज्ञापनदाताओं की कसौटी पर भी चिंगारी पूरी तरह खरा उतरा है।

पीछे मुड़कर देखता हूं तो संघर्षों का एक-एक पल रील की तरह यादों के पर्दे पर चलने लगता है। अतीत की वे तस्वीरें मस्तिष्क पर अंकित होने लगती हैं, जिनमें श्रम, संघर्ष, सेवा और साधना के रंग भरे हुए हैं। पत्रकारिता जब जनसरोकार का धर्म निभाती है, तब ही सार्थक कहलाती है। चिंगारी इस दृष्टि से अपनी पीठ थपथपाने का हकदार है। जनपक्षधरता और धर्मनिरपेक्षता चिंगारी की पहचान है। पाठक खुद इस बात के साक्षी हैं कि जनता के मुद्दों और पीड़ितों के दर्द के साथ चिंगारी ने कभी समझौता नहीं किया। चिंगारी कभी भी भावनाओं में नहीं बहा, बल्कि विषम परिस्थितियों में समाज को सही दिशा देने का प्रयास किया है। चाहे वह कवाल काण्ड का दौर हो, या उससे पहले बाबरी मस्जिद-राम मंदिर प्रकरण को लेकर साम्प्रदायिकता का उभार रहा हो। सन् 90 के बिजनौर के भीषण दंगे में चिंगारी और उसके अभिभावक पत्र बिजनौर टाइम्स ने नफरत व साम्प्रदायिकता की आग को बुझाने में अग्रणी व अविस्मरणीय भूमिका निभाई थी, जिसे तब दूसरे देशों के भी अखबारों व पत्रकारों ने सराहा था।

ऐतिहासिक क्षण

25 अक्टूबर 1985 को बिजनौर जनपद की पत्रकारिता में युगांतकारी घटना हुई, जब तत्कालीन मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह ने बिजनौर आकर जनपद के प्रथम सांध्य दैनिक चिंगारी का विमोचन किया। चित्र में- विमोचन की इस बेला पर मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह के साथ चिंगारी के संस्थापक बाबूसिंह चौहान, प्रथम संपादक चंद्रमणि रघुवंशी व उस समय ब्यूरो चीफ सूर्यमणि रघुवंशी।

आज प्रिंट मीडिया गंभीर संकट के दौर से गुजर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में सैकड़ों अखबार पीडीएफ तक सीमित हो गये हैं। जिलों से छपने वाले कितने ही अखबारों का अस्तित्व ही समाप्त हो चुका है। पूंजीपतियों व कारपोरेट घरानों के भी कई अखबार सिमटकर रह गये हैं। ऐसे में अगर बिजनौर जैसे छोटे नगर से बेहद सीमित साधनों से निकलने वाला चिंगारी अखबार 40 वर्षों से लगातार लोगों के दिलों की धडकन बना हुआ है, तो इसका सारा श्रेय सुधि पाठकों, सहृदयी विज्ञापनदाताओं, समर्पित संवाददाताओं, निष्ठावान सहकर्मियों तथा परिश्रमी एजेंटों, हॉकरों को है।

इस संकल्प के साथ सभी का अभिनंदन, कि हमारी यह यात्रा जारी है, जारी रहेगी।

-सूर्यमणि रघुवंशी

❊ प्रवेशांक ❊

चिंगारी
सांध्य दैनिक
वर्ष : 1 बिजनौर, 25 अक्टूबर 1985 अंक : 1
○ मूल्य : 25 पैसे

पाकिस्तान पर भारत को भरोसा नहीं

राजीव ने ठुकराया जिया का प्रस्ताव

न्यूयार्क 25 अक्तूबर। प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने भारतीय उप महाद्वीप को परमाणु मुक्त क्षेत्र बनाये जाने के पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया उल हक के प्रस्ताव को आज एक तरह से ठुकरा दिया।

श्री गांधी ने यहां एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि इससे भी भारत को यह विश्वास नहीं हो सकता कि पाकिस्तान आणविक हथियार बनाने के कार्यक्रम पर काम नहीं कर रहा है।

श्री गांधी ने कहा कि हम महसूस करते हैं कि 'पाकिस्तान का आणविक हथियार बनाने का कार्यक्रम है।' उन्होंने कहा कि अमरीका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन ने उनसे कहा है कि पाकिस्तान को आणविक हथियार बनाने से रोकने का काम भारत को अवश्य करना चाहिये, हालांकि युक्त में उन्होंने (श्री रीगन) कहा था कि इस्लामाबाद का ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं है।

श्री गांधी ने कहा कि भारत ने पाकिस्तान को एकमुश्त शांति प्रस्ताव की पेशकश की थी, जो बहुत व्यापक था।

उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच विश्वास बढ़ाने की जरूरत है और हम विश्वास का वातावरण बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री गांधी ने एक अन्य प्रश्न के उत्तर में कहा कि श्री झाओ के साथ उन्होंने द्विपक्षीय सम्बन्धों पर विचार विमर्श किया। उसमें चीन, पाकिस्तान आणविक सहयोग की चर्चा नहीं हुई।

एक अमरीकी सिनेटर ने हाल ही में कहा था कि चीन आणविक क्षेत्र में पांच देशों की सहायता कर रहा है जिनमें से पाकिस्तान भी एक है।

जब एक प्रवक्ता ने सीनेटर के बयान की चर्चा की तो श्री गांधी ने कहा, 'हम उनसे और जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करेंगे।'

श्री गांधी ने अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के बारे में विभिन्न सवालों के जवाब दिये।

उन्होंने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की तीन प्राथमिकतायें बताईं। ये हैं गरीबी उन्मूलन, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति और शांति व निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देना।

उन्होंने रंगभेद को समाप्त करने के लिये अपने प्रयासों के बारे में कहा कि अमरीका आशा के अनुरूप इस दिशा में तेजी से प्रयास नहीं कर रहा है।

बाढ़ की मार सात सौ के पार

लखनऊ 25 अक्तूबर। उत्तर प्रदेश के विभिन्न बाढ़ ग्रस्त जिलों में मकान गिरने से 15 और मौतें होने से चालू बाढ़ में मरने वालों की कुल संख्या सात सौ नौ तक पहुंच गई है।

एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार राजस्व विभाग में पिछले 48 घण्टों में दस हजार मकान के ध्वस्त अथवा नष्ट होने के समाचार मिले हैं।

सरकारी बुलेटिन के अनुसार हाल ही बाढ़ में चार लाख 65 हजार मकान नष्ट हुये अथवा क्षतिग्रस्त हुये हैं। बाढ़ से पांच जिले छोड़कर पूरा प्रदेश प्रभावित हुआ है।

गोमती को छोड़कर प्रदेश की सभी प्रमुख नदियां खतरे के निशान से नीचे बह रही हैं हालांकि गोमती जौनपुर तथा सुल्तानपुर में अब भी खतरे के निशान से क्रमशः 53 से. मी. तथा 108 सेन्टीमीटर ऊपर बह रही है।

विश्व के पांच बड़े नेता रीगन से मिले

न्यूयार्क 25 अक्तूबर। ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी, जापान, इटली और कनाडा के नेताओं ने आगामी सोवियत-अमरीका शिखर वार्ता के संदर्भ में आज अमरीका के राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन भेंट की।

श्री रीगन ने यहां पहुंचने के बाद इटली के प्रधानमंत्री बैटिनो क्रेक्सी से भेंट की। उसके बाद पश्चिम जर्मनी के चांसलर हेलमुट कोल, ब्रिटिश प्रधानमन्त्री मार्गरेट थैचर, कनाडा के प्रधानमन्त्री ब्रियान मुलरोनी और जापान के प्रधानमन्त्री यासुहिरो नकासोने भी बैठक में शामिल हुये।

लोकतन्त्र प्रेमी चार गिरफ्तार

इस्लामाबाद 25 अक्तूबर। पाकिस्तान में आज होने वाली लोकतन्त्र बहाली आंदोलन की बैठक को नाकाम करने के उद्देश्य से पाकिस्तान सरकार ने उसके चार प्रमुख नेताओं को गत रात्रि गिरफ्तार कर लिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार कल रात भर यह धर-पकड़ जारी रही। अनेक प्रमुख नेता भूमिगत हो गये जबकि आंदोलन के नेता गुलाम मुस्तफा जटोई को भी उनके घर में नजरबन्द कर लिया। इसके अतिरिक्त डेमोक्रेटिक पार्टी के अध्यक्ष मुश्ताक मिर्जा व लेबर पार्टी के [illegible] भी बन्दी बनाये गये हैं।

राजीव गये हालैण्ड

हेग 25 अक्तूबर। श्री राजीव गांधी भारत के दूसरे प्रधानमन्त्री हैं जो 28 वर्ष बाद हालैण्ड की यात्रा पर जा रहे हैं। इससे पूर्व श्री नेहरू वहां गये थे।

वे वहां एक दिन रूकेंगे तथा आपसी सम्बन्धों पर वहां के प्रधानमन्त्री से बातचीत करेंगे।

आपात स्थिति हटते ही सात और मरे

जोहान्सबर्ग 25 अक्तूबर। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति पी. डब्लू. बोथा ने आज 36 में से छह क्षेत्रों से आपात स्थिति उठा ली।

लेकिन आपात स्थिति वाले [illegible] के बाहरी इलाकों और अन्य क्षेत्रों में रंगभेदी विरोधी दंगा भड़कने से पिछले 24 घण्टों में सात और अश्वेत मारे गये।

पुलिस के अनुसार [illegible] शहर में पहली बार हिंसा वारदात हुई। [illegible] के अनुसार पुलिस उपद्रवियों पर काबू पाने के लिये [illegible] मारे।

वक्र दृष्टि

[illegible]

एक ट्रक शराब पकड़ी गई

जयपुर 25 अक्तूबर। कपूरथला पंजाब से लायी गयी करीब नौ लाख रुपये मूल्य की एक ट्रक शराब मंगलवार को आबकारी अधिकारियों ने जब्त कर ली।

यह बरामदगी इस क्षेत्र में अब तक की सबसे बड़ी है। एक स्थानीय थोक विक्रेता का परमिट 12 अक्तूबर तक ही वैध था, पर यह शराब मंगलवार को पहुंची।

अधिकारियों के अनुसार ट्रक जब्त कर ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया गया है। मामले में आगे जांच जारी है।

मौत ने सड़क पर तीन को दबोचा

देहरादून 25 अक्तूबर। देहरादून जिले में कल दो दुर्घटनाओं में तीन व्यक्तियों की मृत्यु हो गई।

पहली दुर्घटना में कल आधी रात के बाद डोईवाला पुलिस चौकी बैरियर से एक मोटर साइकिल टकरा जाने से मोटर साइकिल पर बैठे तीन लोगों में से एक की घटनास्थल पर ही मृत्यु हो गई जबकि दूसरे ने इस अस्पताल में दम तोड़ा। मोटर साइकिल पर बैठे तीसरे व्यक्ति को मामूली चोट आयी है।

दूसरी दुर्घटना में कल शाम विकासनगर के निकट एक व्यक्ति एक जीप से कुचल गया। बाद में अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गई।

पुलिस ने तीनों लाशों को पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री
श्री वीर बहादुर सिंह
का
❊हार्दिक स्वागत❊

परमाणु परीक्षण कर ही लिया

न्यूजीलैंड 25 अक्तूबर। फ्रांस ने दक्षिण प्रशांत स्थित अपने भूमिगत-मुरुरोआ परमाणु परीक्षण केन्द्र में कल अपना बहु-प्रचारित परमाणु परीक्षण किया। फ्रांस का इस वर्ष का यह पांचवा और 1975 के बाद से 72 वां परमाणु परीक्षण था।

दुर्घटना में मर गये पन्द्रह

हैदराबाद 25 अक्तूबर। पश्चिम गोदावरी में भीमावरम के निकट कल हुई एक वाहन दुर्घटना में घायल तीन व्यक्तियों की आज मृत्यु होने के साथ मरने वालों की संख्या पन्द्रह हो गयी है।

पुलिस ने आज यह जानकारी दी। यह दुर्घटना उस समय हुई जब एक वैन नहर में जा गिरी थी।

राष्ट्रपति की अपहृत पुत्री रिहा

सान सल्वाडोर 25 अक्तूबर। अल सल्वाडोर के राष्ट्रपति जोस नेपोलियन दुआर्टे की अपहृत पुत्री को आज छापामारों ने रिहा कर दिया।

राष्ट्रपति के मुख्य सलाहकार ने यह जानकारी दी। एक स्थानीय रेडियो ने बताया कि मैरिओना जेल से 22 राजनीतिक कैदी एक बस से हवाई अड्डे के लिये रवाना हो गये हैं।

मुख्यमंत्री वीर बहादुर का बिजनौर में भव्य स्वागत

बिजनौर 25 अक्तूबर। उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री वीर बहादुर सिंह का बिजनौर जिले में पहली बार पहुंचने पर भव्य स्वागत किया गया। मुख्य मन्त्री श्री सिंह का स्वागत करने के लिये बैराज पर भारी भीड़ जमा थी।

वे अपने निर्धारित समय से कुछ विलम्ब से यहां पहुंचे। मुख्यमंत्री श्री सिंह आज दोपहर 'चिंगारी' [illegible] का उद्घाटन कर [illegible] बिजनौर की हिन्दी पत्रकारिता [illegible] है।

चिंगारी सांध्य दैनिक का प्रथम अंक (25 अक्टूबर 1985)

श्रम, संघर्ष, सेवा और साधना के 40 वर्ष

‘चिंगारी’ बिजनौर की पत्रकारिता का अमर प्रकाश

“

26 जनवरी 1950

भारत के इतिहास का वह स्वर्णिम दिन, जब इस महान राष्ट्र ने अपने लोकतांत्रिक सफर की औपचारिक शुरूआत की। यही वह क्षण था जब भारत ने विश्व मंच पर यह घोषणा की कि अब यह देश अपने संविधान और अपने नागरिकों की इच्छा से संचालित होगा। भारत एक गणराज्य बना, और आजादी के अमृत में भीगे उस दिन देश के हर कोने में नई चेतना, नई उम्मीद और नए संकल्पों की लहर उठी।

उसी ऐतिहासिक क्षण में, उत्तर प्रदेश के बिजनौर जनपद में भी एक ‘चिंगारी’ फूटी– एक ऐसी पत्रकारिता की चिंगारी, जिसने न केवल स्याही और कागज के माध्यम से, बल्कि विचार और सत्य के प्रकाश से समाज को रोशन किया।

एक ऐसा अखब्बार, जो आजादी के बाद से बिजनौर की हर धड़कन का गवाह बना है, जिसने इस जिले के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आर्थिक उतार-चढ़ाव को अपने पन्नों में सहेजा है। यह केवल एक समाचार-पत्र नहीं, बल्कि समय का सच बोलता हुआ वह आईना है जिसमें बिजनौर के जनजीवन की तस्वीर झलकती है। इसने उस किसान की पीड़ा को भी स्वर दिया है जो खेतों में पसीना बहाता है, और उस नौजवान की उम्मीदों को भी दिशा दी है जो परिवर्तन का सपना देखता है।

हर शाम जब इसकी स्याही से सनी सुर्खियाँ पाठकों के घरों तक पहुँचती हैं, तो वे केवल खबरें नहीं लातीं कृ वे एक जागरूक समाज का दस्तावेज होती हैं। इस अखबार ने सत्ताओं के बदलते मिजाज देखे हैं, आंदोलनों की आहटें सुनी हैं, और विकास के हर छोटे-बड़े प्रयासों को दर्ज किया है। बिजनौर की गलियों से लेकर ग्राम्य परिवेश तक, यह हर आवाज का साथी बना रहा है।

आज जब सूचना की गति तेज हो चुकी है, तब भी इस अखबार की विश्वसनीयता वही है, जो जनसरोकारों की धडकनों से जुड़ी हुई है। यह केवल अतीत का रक्षक नहीं, बल्कि वर्तमान का साक्षी और भविष्य का मार्गदर्शक भी है। इसकी हर पंक्ति, हर शीर्षक और हर संपादकीय इस बात की गवाही देते हैं कि शब्द यदि सच्चे हों, तो वे समय को भी चुनौती दे सकते हैं।

यह ‘चिंगारी’ थी एक साप्ताहिक समाचार पत्र ‘चिंगारी’, जिसने उस युग में जन्म लिया जब न सूचना तकनीक थी, न संचार के आधुनिक साधन। लेकिन एक कलम थी, एक संकल्प था, और था सच्चाई को जन-जन तक पहुंचाने का जज्बा। इस अखबार के संस्थापक थे प्रख्यात पत्रकार बाबू सिंह चौहानकृएक ऐसा नाम जिसने न सिर्फ बिजनौर बल्कि समूचे पश्चिमी उत्तर प्रदेश की पत्रकारिता को नई दिशा दी। उन्होंने केवल एक अखबार नहीं शुरू किया, बल्कि एक विचारधारा, एक आंदोलन और एक सामाजिक क्रांति की नींव रखी, जो आज भी अपनी लौ में उतनी ही प्रखरता लिए हुए है।

1950 का भारत गांवों और कस्बों में बसा हुआ था। आजादी के बाद देश लोकतंत्र के पहले चरण में प्रवेश कर रहा था, लेकिन ग्रामीण भारत अब भी अभाव, असमानता और अज्ञान की जकड़ में था। संचार के साधन सीमित थे, रेडियो और टेलीफोन भी बड़े शहरों की सीमा तक ही सिमटे थे। ऐसे में किसी जिले या कस्बे से प्रकाशित समाचार पत्र का निकलना स्वयं में एक साहसिक कार्य था। लेकिन बाबू सिंह चौहान के भीतर यह दृढ़ विश्वास था कि अगर लोकतंत्र को मजबूत बनाना है, तो जनता को सशक्त और जागरूक करना अनिवार्य है, और यही कार्य पत्रकारिता के माध्यम से किया जा सकता है।

‘चिंगारी’ का उदय उसी विचार से हुआ, एक ऐसी कलम के रूप में जो झुकती नहीं थी, डरती नहीं थी, और सच के लिए लड़ने का साहस रखती थी। चौहान जी का उद्देश्य केवल समाचार प्रकाशित करना नहीं था, बल्कि जनचेतना जगाना, अन्याय के विरूद्ध आवाज उठाना और लोकतंत्र की आत्मा को शब्द देना था। उनके लेखों में गाँव की धड़कन थी, किसान की पीड़ा थी, और आम आदमी की उम्मीद थी। यही कारण था कि ‘चिंगारी’ अपने आरंभिक वर्षों में ही जनता के दिलों की आवाज बन गई।

‘चिंगारी’ ने शुरूआत से ही यह सिद्ध कर दिया कि वह केवल सूचना देने वाला माध्यम नहीं, बल्कि जनता का प्रहरी, समाज का दर्पण और बदलाव की आवाज बनेगा। उसने उन मुद्दों को उठाया जिन्हें बड़े शहरों के अखबारों ने अक्सर अनदेखा किया। उसने किसानों की दुर्दशा, शिक्षा की कमी, श्रमिकों के शोषण, युवाओं की बेरोजगारी और सामाजिक विषमता जैसे विषयों को प्राथमिकता दी। ‘चिंगारी’ के पन्नों पर खबरें केवल शब्द नहीं थीं, वे संवेदना, साहस और संघर्ष की साक्षी थीं। बाबू सिंह चौहान की लेखनी में एक अजीब ऊर्जा थी। वे सत्ता से टकराने से कभी नहीं डरते थे। उन्होंने स्थानीय प्रशासन से लेकर राज्य सरकार तक उन सभी विषयों को उजागर किया जिनसे जनता प्रभावित होती थी। यही कारण था कि बिजनौर और उसके आस-पास के जिलों में ‘चिंगारी’ को जनता का अखबार कहा जाने लगा। लोगों को विश्वास था कि यदि उनकी समस्या किसी तक पहुंचेगी तो वह ‘चिंगारी’ के माध्यम से ही होगी। इस प्रकार, यह अखबार केवल समाचार का माध्यम नहीं रहा, बल्कि लोकतांत्रिक भागीदारी का प्रतीक बन गया।

समय बदला, तकनीक आई, और पत्रकारिता का स्वरूप विकसित होता गया। लेकिन ‘चिंगारी’ ने अपने मूल्यों को कभी नहीं छोड़ा। सच्चाई, निष्ठा और जनसेवा, ये तीन स्तंभ उसके हर अंक में झलकते रहे। चार दशकों तक साप्ताहिक पत्र के रूप में प्रकाशित होने के बाद, ‘चिंगारी’ ने अपने विकास के अगले चरण में प्रवेश किया और ‘संध्या दैनिक’ के रूप में परिवर्तित हुआ। यह केवल नाम या स्वरूप का परिवर्तन नहीं था, यह उस विचार की परिपक्वता थी जिसने पत्रकारिता को जनसेवा का माध्यम माना था। संध्या दैनिक के रूप में यह अखबार दिनभर की घटनाओं को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने लगा, जिसमें विश्लेषण, संवेदना और स्थानीय सरोकारों का समुचित संतुलन था।

इससे पूर्व ‘बिजनौर टाइम्स’ के रूप में जनपद का प्रथम प्रातःकालीन हिंदी दैनिक आरंभ हुआ। इस प्रकार, एक ही समूह दिन और शामकृदोनों समय जनता तक समाचार पहुंचाने का माध्यम बन गया। सुबह की खबरों में जहाँ राष्ट्रीय और वैश्विक दृष्टि झलकती थी, वहीं शाम की ‘चिंगारी’ में स्थानीय जीवन की गहराइयाँ, जनसरोकारों की प्रतिध्वनियाँ और क्षेत्रीय आत्मा की झंकार मिलती थी। यह संयोजन अद्वितीय था, एक ओर विवेक की रोशनी, दूसरी ओर जनभावना की ज्वाला।

1975 का दौर, भारत के लोकतांत्रिक इतिहास का सबसे चुनौतीपूर्ण अध्याय। जब आपातकाल ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को जकड़ लिया, जब प्रेस पर सेंसरशिप के शिकंजे कस दिए गए। अनेक अखबार या तो मौन हो गए या सत्ता के दबाव में झुक गए। लेकिन ‘चिंगारी’ ने अपने नाम के अनुरूप अपनी लौ को मंद नहीं होने दिया। बाबू सिंह चौहान और उनकी निर्भीक टीम ने सरकारी दबाव, संसाधनों की कमी और भय के वातावरण के बावजूद सच को छुपने नहीं दिया। उन्होंने सिद्ध किया कि पत्रकारिता केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि एक राष्ट्रधर्म है।

बिजनौर जैसे छोटे जनपद से निकलकर यह अखबार उस समय भी लोकतंत्र की आत्मा की रक्षा कर रहा था। जब देश में भय का वातावरण था, तब ‘चिंगारी’ के संपादकीय लेख पाठकों में साहस और विश्वास भर रहे थे। यह पत्र उन असंख्य आवाजों का प्रतिनिधि बना जो उस समय दबा दी गई थीं।

धीरे-धीरे ‘चिंगारी’ बिजनौर की आत्मा बन गई। उसने खेतों से लेकर पाठशालाओं तक, चौपालों से लेकर अदालतों तक हर जगह अपनी उपस्थिति दर्ज की। चाहे किसानों के अधिकारों की लड़ाई हो, बाढ़-सूखे का संकट, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति या रोजगार का सवाल, ‘चिंगारी’ ने हर मुद्दे को आवाज दी। यह अखबार केवल घटनाओं का दस्तावेज नहीं बना, बल्कि जनता के संघर्षों का इतिहास बन गया।

उसके लेख केवल सूचना नहीं देते थे, बल्कि विचारों को जन्म देते थे, संवाद को दिशा देते थे और समाज को जागरूक बनाते थे। उसने यह साबित किया कि पत्रकारिता केवल खबरों का संग्रह नहीं, बल्कि समाज की अंतरात्मा का प्रतिबिंब है।

आज जब पत्रकारिता पर टीआरपी, विज्ञापन और राजनीतिक झुकाव के साये मंडरा रहे हैं, तब भी ‘चिंगारी’ और ‘बिजनौर टाइम्स’ अपनी मूल निष्ठा पर अडिग हैं। उन्होंने न कभी सनसनीखेजी का सहारा लिया, न झूठे प्रचार का जाल बुना। उन्होंने केवल सत्य, समाजहित और जनकल्याण को अपना मार्गदर्शन माना। यही कारण है कि यह अखबार आज भी जनता के विश्वास, स्नेह और सम्मान का प्रतीक है। उनके पन्नों पर छपे शब्द आज भी वही गरिमा रखते हैं जो किसी बड़े महानगर के अखबार में नहीं मिलती, क्योंकि वे शब्द किसी विज्ञापनदाता के लिए नहीं, बल्कि जनता के लिए लिखे जाते हैं।

बिजनौर जैसे जनपद से निकलकर ‘चिंगारी’ ने यह सिद्ध किया कि पत्रकारिता की शक्ति उसकी ईमानदारी में निहित होती है, न कि उसके संसाधनों में। यह अखबार भले सीमित साधनों से चलता रहा, पर उसके विचार असीम रहे। उसने न केवल पत्रकारिता की परंपरा को जीवित रखा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श स्थापित किया।

आज बिजनौर में जो भी युवा पत्रकार कलम उठाता है, उसकी प्रेरणा कहीं न कहीं ‘चिंगारी’ की उसी ज्योति से मिलती है जो 1950 में प्रज्वलित हुई थी।

चार दशकों से अधिक की इस अद्भुत यात्रा में ‘चिंगारी’ ने केवल खबरें नहीं दीं, बल्कि इतिहास लिखा है, वह इतिहास जिसमें एक छोटे शहर की कलम ने लोकतंत्र के सबसे बड़े आदर्शों को जिया। आज भी जब शाम ढलती है और ‘चिंगारी’ का नया अंक पाठकों के हाथों में आता है, तो उसमें केवल शब्द नहीं होते, उसमें होती है सच्चाई की लौ, साहस की गर्मी और विचारों की रोशनी।

यह अखबार हर अंक के साथ यह याद दिलाता है कि लोकतंत्र केवल संसद और विधानसभाओं में नहीं बसता, वह उन कलमों में जीवित रहता है जो सत्ता से प्रश्न पूछने का साहस रखती हैं।

आज जब डिजिटल युग का शोर बढ़ रहा है, जब खबरें सेकंडों में मोबाइल स्क्रीन पर आ जाती हैं, तब भी ‘चिंगारी’ का अस्तित्व यह प्रमाण है कि विश्वसनीयता की कोई वैकल्पिक तकनीक नहीं होती। उसकी सादगी, उसकी सत्यनिष्ठा और उसके लेखों की मानवीय गहराई उसे आज भी प्रासंगिक बनाए हुए हैं।

बिजनौर के जनमानस में यह अखबार केवल समाचार पत्र नहीं, बल्कि एक भावना बन चुका है, एक ऐसी भावना जो सत्य, न्याय और लोकसेवा के आदर्शों से संचालित है।

‘चिंगारी’ आज भी जल रही है, पहले से अधिक प्रखर, पहले से अधिक उज्ज्वल। क्योंकि यह केवल एक अखबार नहीं, बल्कि उस अमर विचार का प्रतीक है कि सत्य की आवाज कभी दबाई नहीं जा सकती। इसके संपादक द्वय श्री चंद्रमणि जी एवं सूर्यमणि बिजनौर के लिए एक थाती है। एक जीती जागती जिजीविषा हैं, जो आम जन की आवाज बनकर उभरते हैं। यह लौ तब तक जलती रहेगी जब तक इस धरती पर कोई ऐसा नागरिक रहेगा जो अन्याय के खिलाफ बोलने, सच को लिखने और समाज को जगाने का साहस रखता है।

और हर बार जब इतिहास पत्रकारिता के महान अध्यायों की गिनती करेगा, तब बिजनौर की यह ‘चिंगारी’ उसमें सदा प्रखर रूप से चमकेगी, एक ऐसी रोशनी के रूप में, जिसने सच्चाई को शब्द दिए और लोकतंत्र को आत्मा।

– राहुल नील

जनपद की पत्रकारिता का नया अध्याय

सांध्य दैनिक चिंगारी के प्रवेशांक में लिखे गये संपादकीय के प्रमुख अंश

चिंगारी साध्य दैनिक बिजनौर, 25 अक्तूबर' 85 (3)

संपादककीक़लम से

जनपद की पत्रकारिताके नये अध्याय का प्रारंभ

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में दधीचि का स्थान रखने वाले सम्पादकाचार्य पं. रुद्रदत्त शर्मा के जनपद की पत्रकारिता के इतिहास में आज से एक नये अध्याय का सूत्रपात हो रहा है। बिजनौर जनपद की पत्रकारिता के इतिहास के इस नये अध्याय को रच रहा है, बिजनौर जनपद का प्रथम साध्य दैनिक 'चिंगारी', और इस नये अध्याय का श्रीगणेश उत्तर प्रदेश के सजग, गतिशील, जमीन से जुड़े हुये मुख्यमंत्री श्री वीर बहादुर सिंह के कर-कमलों से हो रहा है।

जब भी जनपद की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास लिखा जायेगा, तब 25 अक्तूबर' 85 को जनपद की पत्रकता में युगान्तरकारी दिवस रूप में अवश्य ही रेखांकित कि जायेगा और 'चिंगारी' तथा मान मुख्यमंत्री श्री वीर बहादुसिंह का उल्लेख गौरव के साथ या जायेगा।

यद्यपि सम्पादकाचार्य पं. रुद्रदत्त शर्मा के 1872 में हिंदी पत्रकारिता में पदार्पण के साथ ही हिंदी पत्रकारि के विकास और उन्नयन में बिजनौर जनपद का योगदान प्रार हो जाता है, जनपद की पत्रकारिता के 113 वर्ष लम्बे इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिवस 1917 में आया, जब पं. नरोत्तम व्यास ने प्रथम हिंदी साप्ताहिक पत्र 'निर्बल सेवक' का प्रकाशन आरंभ कर जनपद की हिंदी पत्रकारिता का एक नया अध्याय प्रारम्भ किया। हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्रों के शानदार अध्याय के बाद जनपद की हिंदी पत्रकारिता में दैनिक समाचार पत्रों के युग का सूत्रपात 1963 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिन 14 नवम्बर को हुआ, इस तिथि को जनपद का प्रथम दैनिक समाचार पत्र 'बिजनौर टाइम्स' का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। दैनिक पत्रों का युग प्रारम्भ करने का श्रेय श्री बाबू सिंह चौहान को है और आज हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में सांध्य दैनिक के नये अध्याय की शुरुआत भी श्री बाबूसिंह चौहान कर रहे हैं। यह भी अजीब संयोग है कि जिस तिथि यानि 26 जनवरी 1950 को भारत को गणराज्य घोषित किया गया, उस तिथि को श्री बाबू सिंह चौहान ने जिस साप्ताहिक पत्र 'चिंगारी' का श्रीगणेश किया था, वह पत्र अपने लम्बे और शानदार इतिहास के बाद आज सांध्य दैनिक समाचार पत्र के रूप में प्रारम्भ हो रहा है।

'चिंगारी' का प्रारम्भ से लेकर अब तक का इतिहास संघर्षों का इतिहास रहा है। इस पत्र ने समाचार पत्रों की दुनिया में निष्पक्षता, सत्यता और निर्भीकता का शानदार इतिहास रचा है, और हम विश्वास दिलाते हैं कि अब 'चिंगारी' सांध्य दैनिक समाचार पत्र के रूप में अपने तेवर से एक नया गौरवपूर्ण इतिहास रचेगा।

मुख्यमन्त्री श्री वीर बहादुर सिंह आम आदमी के धरातल से उठकर प्रदेश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुये हैं और उन्होंने प्रदेश में जड़ता तोड़ने तथा सक्रियता लाने के लिये जिस गतिशीलता से कार्य प्रारम्भ किया है, अकर्मण्यता भ्रष्टाचार और लापरवाही पर जिस ढंग से प्रहार किया है, 'चिंगारी' पत्र उसी प्रकार भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता, सामाजिक और आर्थिक अपराधियों के विरुद्ध जम कर लिखेगा और आम आदमी से जुड़े रहकर, मौन आम आदमी की आवाज को शासन तक पहुंचाने तथा नया परिवेश रचने के लिये अलख जगाने का काम करेगा।

'चिंगारी' सांध्य दैनिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा के लिये संघर्षरत रहेगा तथा निष्पक्षता, सत्यता, निर्भीकता के साथ पत्रकारिता में नये आयाम स्थापित करेगा। हम आशा करते हैं कि मुख्यमन्त्री श्री वीरबहादुर सिंह के संरक्षण और आशीर्वाद से 'चिंगारी' अपने उद्देश्य और लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहेगा।

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में दधीचि का स्थान रखने वाले संपादकाचार्य पंडित रूद्रदत्त शर्मा के जनपद की पत्रकारिता के इतिहास में आज से एक नये अध्याय का सूत्रपात हो रहा है। इस नये अध्याय को रच रहा है बिजनौर जनपद का प्रथम सांध्य दैनिक चिंगारी, और इस नये अध्याय का श्रीगणेश उत्तर प्रदेश के सजग, गतिशील, जमीन से जुड़े हुये मुख्यमंत्री श्री वीर बहादुर के कर कमलो से हो रहा है। जब भी बिजनौर जनपद की पत्रकारिता का इतिहास लिखा जायेगा, तब 25 अक्टूबर 1985 को जनपद की पत्रकारिता में युगांतकारी दिवस के रूप में अवश्य ही रेखांकित किया जायेगा और चिंगारी तथा मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह का उल्लेख गौरव के साथ किया जायेगा। जनपद की पत्रकारिता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिवस 1917 में आया, जब पंडित नरोत्तम व्यास ने प्रथम हिंदी साप्ताहिक पत्र 'निर्बल सेवक' का प्रकाशन आरंभ किया। हिंदी साप्ताहिक समाचार-पत्रों के शानदार अध्याय के बाद जनपद की हिंदी पत्रकारिता में दैनिक समाचार-पत्रों के युग का सूत्रपात 1963 में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के जन्मदिन 14 नवम्बर को हुआ। इस तिथि को जनपद का प्रथम दैनिक समाचार-पत्र 'बिजनौर टाइम्स' का प्रकाशन आरंभ हुआ। दैनिक पत्रों का युग प्रारंभ करने का श्रेय श्री बाबूसिंह चौहान को है और आज (25 अक्टूबर 1985) हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में सांध्य दैनिक के नये अध्याय की शुरूआत भी श्री बाबूसिंह चौहान कर रहे हैं। यह भी अजीब संयोग है कि जिस तिथि 26 जनवरी 1950 को भारत को गणराज्य घोषित किया गया, उस तिथि को श्री बाबूसिंह चौहान ने जिस साप्ताहिक पत्र चिंगारी का श्रीगणेश किया था, वह पत्र अपने लम्बे और शानदार इतिहास के बाद सांध्य दैनिक समाचार-पत्र के रूप में प्रारंभ हो रहा है। चिंगारी का प्रारंभ से लेकर अब तक का इतिहास संघर्षो का इतिहास रहा है। इस पत्र ने समाचार-पत्रों की दुनिया में निष्पक्षता, सत्यता और निर्भीकता का शानदार इतिहास रचा है, और हम विश्वास दिलाते हैं कि अब चिंगारी सांध्य दैनिक समाचार-पत्र के रूप में अपने तेवर से एक नया गौरवपूर्ण इतिहास रचेगा। चिंगारी, भ्रष्टाचार, अकर्मण्यता, सामाजिक और आर्थिक अपराधियों के विरुद्ध जमकर लिखेगा और आम आदमी से जुड़े रहकर, मौन आदमी की आवाज को शासन तक पहुंचाने तथा नया परिवेश रचने के लिये अलख जगाने का काम करेगा। चिंगारी सांध्य दैनिक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिये संघर्षरत रहेगा तथा निष्पक्षता, सत्यता, निर्भीकता के साथ पत्रकारिता में नये आयाम स्थापित करेगा।

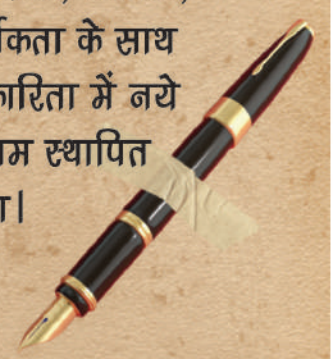

चिंगारी नकारात्मकता के अंधेरे में आशा की एक किरन है!

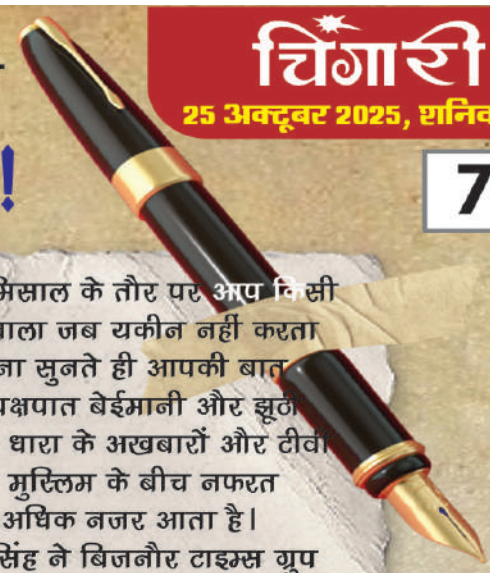

आज का मीडिया दो अलग अलग हिस्सो में बंटा नजर आता है। एक बड़ा हिस्सा जो मुख्य धारा का मीडिया कहलाता है लेकिन जनता का भरोसा लगभग पूरी तरह से खो चुका है। दूसरा चिंगारी जैसा आंचलिक एवं मीडियम न्यूज पेपर जो अपने सीमित साधनों के साथ अपने जनवादी समाजवादी और सेकुलर मूल्यों के लिये संघर्ष करता हुआ आज के नकरात्मकता के अंधेरे में आशा की एक किरन बनकर मानवता नैतिक मूल्यों और उसूलों के लिये अपना सब कुछ अर्पित करने को तैयार रहता है। आज के पूंजीवादी दौर में जब छोटी मछली को लगातार बड़ी मछली अपना शिकार बना रहीं हैं। इस भौतिकतावादी सोच से मीडिया भी नहीं बचा है। लेकिन हिंदी अखबार चिंगारी सांध्य दैनिक ने ऐसे में भी अपनी विश्वसनीयता जनपक्षधरता और निष्पक्षता के बल पर खुद को अवमूल्यन के अंधेरे में मशाल बनाया हुआ है। जबकि तथाकथित बड़े अखबार और चैनल सत्य तथ्य और प्रमाण की जगह झूठ घृणा और सत्ता का प्रचार कर रहे हैं।

जो मीडिया कभी आम आदमी के लिये सच की मिसाल देने के काम आता था। मिसाल के तौर पर आप किसी से कहते थे कि हमारे पड़ौसी देश में सरकार का तख्तापलट हो गया तो सामने वाला जब यकीन नहीं करता था तो आप कहते थे कि यह खबर अखबार और टीवी चौनल पर आ रही है। इतना सुनते ही आपकी बात सही मान ली जाती थी। लेकिन आज इसका उल्टा हो रहा है। आज उसको लोग पक्षपात बेईमानी और झूठी सूचनाओं के लिये गाली देने के तौर पर गोदी मीडिया कहने लगे हैं। आज मुख्य धारा के अखबारों और टीवी चौनल का खास एजेंडा सरकार की चापलूसी करना उसकी नाकामी छिपाना हिंदू मुस्लिम के बीच नफरत फैलाना फर्जी और नकली मुद्दों पर गुमराह करने वाला झूठा नैरेटिव खड़ा करना अधिक नजर आता है।

25 अक्तूबर 1985 को जब उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह ने बिजनौर टाइम्स ग्रुप के इवनिंग एडिशन चिंगारी दैनिक का विमोचन किया तो इन पंक्तियों का लेखक भी उस समारोह में ग्रुप के एक प्रशिक्षु पत्रकार के तौर पर वहां मौजूद था। उस समय चिंगारी के संरक्षक और सर्वेसर्वा वरिष्ठ पत्रकार चिंतक व विचारक बाबू सिंह चौहान से उनके कुछ मित्रों और शुभचिंतकों ने बिना किसी लाग लपेट के कहा था कि चिंगारी का भविष्य उज्जवल नहीं है। उनकी भावना आगाह करने को अच्छी भले ही रही होगी। लेकिन उनको पूरी आशंका इस बात की थी कि शाम का अखबार वह भी दैनिक चलाना और भी कठिन ही नहीं एक तरह से नामुमकिन काम है। लेकिन अपनी धुन के पक्के प्रगतिशील सोच के पैरोकार चौहान साहब ने नकारात्मक बातों पर कान न देकर अपना मिशन शुरू कर दिया। शुरू में उनके बड़े पुत्र श्री चंद्रमणि रघुवंशी ने चिंगारी के संपादन की जिम्मेदारी बखूबी निभाई। कुछ समय बाद उनके छोटे पुत्र सूर्यमणि रघुवंशी ने चिंगारी के संपादन में चिंगारी की चमक दिन ब दिन और तेजी से बढ़ने लगी। इसमें कोई दो राय नहीं चिंगारी का 40 साल का सफर उसके साइज उसके कागज या उसकी छपाई की किसी खास तकनीक की वजह से नहीं बल्कि पाठकों में उसकी विश्वसनीयता की वजह से आगे बढ़ता गया है।

चिंगारी के हैडिंग शेर ओ शायरी की तरह रदीफ काफिये के हिसाब से तुकांत होने को लोगों ने हाथो हाथ लिया। चिंगारी लोगों के लिये चटपटी और गुदगुदाने वाली खबरों के साथ ही शाम की चाय का साथी बन गया। इसके बाद इसमें खबरों का ऐसा सैलाब आया कि इसके पन्ने लगातार बढ़ाने पड़े। लेकिन कीमत थोड़ी ही बढ़ाई गयी। एक दिन ऐसा आया कि जो बड़े पत्रकार और अखबार चिंगारी को हिकारत की निगाह से देखते थे और इसके जल्दी ही बंद होने का एलान कर रहे थे। उनको निराशा हाथ लगी। चिंगारी दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करता गया। हालत यह हो गयी कि बड़े अखबार और चैनल तक इसकी खबरों की स्टाइल की नकल करने लगे। कुछ कथित बड़े ब्रांड समझे जाने वाले मीडिया हाउसों को तो इसकी शाम को सबसे पहले छपने वाली खबरों से अपनी अहम खबरें न छूटने का एलर्ट भी मिलने लगा है। चिंगारी आज के स्वार्थ के दौर में भी पूरी तरह व्यसवायिक तौर तरीके नहीं अपनाता है। चिंगारी अपने संस्थापक और राष्ट्रीय स्तर के मूर्धन्य पत्रकार रहे चौहान साहब के दिखाये गरीब और कमजोर समर्थक रास्ते पर आज भी तमाम कठिनाइयों के बावजूद चल रहा है। पीडीएफ विकल्प आने से इसके पाठकों की तादाद ही नहीं बढ़ी बल्कि इसके सहयोगी संवाददाता विज्ञापनदाता और शुभचिंतक भी इसके तेवर और इसके संपादक सूर्यमणि भाई की खुशअखलाकी डाउन टू अर्थ छवि सादगी नफासत सदाकत और सहाफत के लोग कायल होते गये।

कोई माने या ना माने आज के प्रतिस्पर्धा महंगाई और तमाम तरह के दबाव के दौर में चिंगारी जैसा अखबार लगातार चार दशक से चलाये रखना एक तरह से लोहे के चने चबाने जैसा ही है। चिंगारी की निष्पक्षता निडरता और स्पष्टता के तो उसके आलोचक भी कायल हैं। चिंगारी की सबसे बड़ी खूबी यही है कि वह सच और न्याय के मामले में किसी से समझौता नहीं करता है। चिंगारी आज भी सरकार से अधिक अपने पाठकों आम जनता के विज्ञापनदाताओं और शुभचिंतकों से मिलने वाले सहयोग पर चल रहा है। सही बात तो यह है कि जिस चिंगारी को पुरस्कार मिलना चाहिये उसको आर्थिक दंड मिल रहा है। सबको पता है कि आज के दौर में अखबार निकालना और उसको बेचकर जनहित की पत्रकारिता करना घाटे का सौदा है। लागत के हिसाब से देखा जाये तो किसी अखब्बार के जितने पेज होते हैं, उसकी लागत लगभग उतने ही रूपये रोज की आती है। जाहिर बात है कि इतने अधिक मूल्य पर कोई भी समाचार पत्र बिकता नहीं है। ऐसे में किसी भी न्यूज पेपर को मजबूरन विज्ञापनों पर निर्भर होना पड़ता है। यह भी स्पश्ट है कि आज सबसे बड़ी विज्ञापनदाता इकाई सरकार और उससे जुड़े कॉरपोरेट व अन्य अर्धशासकीय संस्थायें ही हैं। पहले सरकार कभी कभी किसी किसी मामले में मीडिया में दखल देती थी। उसको अपवाद मानकर मीडिया भी पचा लेता था। लकिन आज सरकार की हालत यह है कि वह विज्ञापन देकर एक तरह से मीडिया को अपना गुलाम समझने लगी है। ऐसे में चिंगारी जैसे परोपकारी और निष्पक्ष अखबार को बार बार सलाम करता हूं। इसके संपादक प्रकाशक लेखक संवाददाता विज्ञापनदाता कर्मचारी और किसी भी तरह के सहयोगी एक मिशन के सिपाही हैं, हम उनकी भावना का सम्मान करते हैं। ऐसा लगता है कि चिंगारी टाज के दौर को ललकार रहा है-

तुम्हारी सोच के सांचे में ढल नहीं सकता, जबान काट लो लहजा बदल नहीं सकता।
मुझे भी मोम का पुतला समझ रहे हो क्या, तुम्हारी लौ से ये लोहा पिघल नहीं सकता।।

-इकबाल हिंदुस्तानी

नोट- लेखक पब्लिक ऑब्जर्वर के चीफ एडिटर और नवभारत टाइम्स डॉटकाम के ब्लॉगर हैं।

श्रम, संघर्ष, सेवा और साधना के 40 वर्ष

जब चिंगारी पर धारा 144 लगा दी गई

चिंगारी का जन्म चिंगारी हिन्दी साप्ताहिक के रूप में 26 जनवरी 1950 को हुआ था। हालांकि तब देश गणराज्य घोषित हो गया था, लेकिन तब तक प्रेस एक्ट नहीं बना था। चिंगारी अपने जन्मकाल से ही भ्रष्टाचार के विरुद्ध मुखर था। चिंगारी, भ्रष्ट आचरण रहित स्वच्छ समाज के लिये समर्पित था। चिंगारी के एक अंक में मुरादाबाद के तत्कालीन डी.एम. के भ्रष्टाचार के बारे में एक समाचार छपा था, जिसे पढकर डीएम साहब बौखला गये। उन्होंने अपने सलाहकारों को चिंगारी के विरुद्ध कदम उठाने पर विचार-विमर्श किया लेकिन प्रेस एक्ट न होने के कारण एक सलाहकार की सलाह पर डी.एम. ने धारा 144 के तहत मुरादाबाद जिले में चिंगारी की बिक्री तथा खरीद पर पाबंदी लगा दी और फरमान जारी कर दिया कि जो भी व्यक्ति चिंगारी की प्रति खरीदेगा, उसके विरुद्ध धारा 144 के उल्लंघन की कार्रवाई की जायेगी। इस तरह मुरादाबाद जिले में चिंगारी के उक्त अंक के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। इसके बाद एक अन्य अंक में रामपुर के तत्कालीन जिलाधिकारी के भ्रष्टाचार के बारे में समाचार छपा था। रामपुर के डीएम ने भी मुरादाबाद के डीएम का अनुसरण करते हुए रामपुर जिले में चिंगारी के उक्त अंक के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया था। भारत की पत्रकारिता के इतिहास में चिंगारी पहला ऐसा समाचार-पत्र है, जिसके विरुद्ध धारा 144 का प्रयोग किया गया।

देश में 1953 में प्रेस अधिनियम (प्रेस एक्ट) लागू हुआ, जिसके अंतर्गत सरकार तथा प्रशासन को समाचार-पत्रों पर अंकुश लगाने के लिये अनेक अस्त्र-शस्त्र मिल गये।

-चन्द्रमणि रघुवंशी

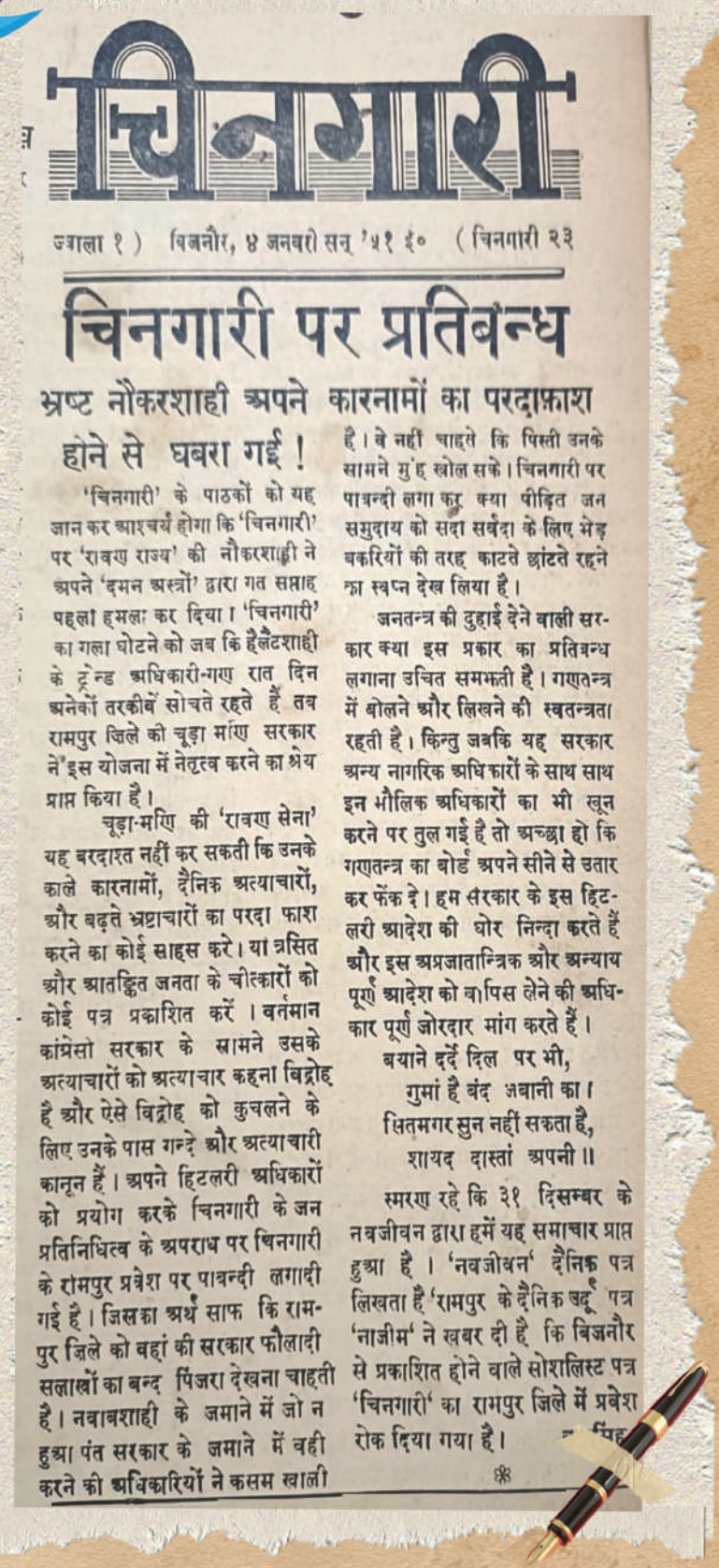

चिनगारी

ज्वाला १) बिजनौर, ४ जनवरी सन् '५१ ई० (चिनगारी २३

चिनगारी पर प्रतिबन्ध

भ्रष्ट नौकरशाही अपने कारनामों का परदाफ़ाश होने से घबरा गई !

'चिनगारी' के पाठकों को यह जान कर आश्चर्य होगा कि 'चिनगारी' पर 'रावण राज्य' की नौकरशाही ने अपने 'दमन अस्त्रों' द्वारा गत सप्ताह पहला हमला कर दिया। 'चिनगारी' का गला घोटने को जब कि हैलैटशाही के ट्रेन्ड अधिकारी-गण रात दिन अनेकों तरकीबें सोचते रहते हैं तब रामपुर जिले की चूड़ा मणि सरकार ने 'इस योजना में नेतृत्व करने का श्रेय प्राप्त किया है।

चूड़ा-मणि की 'रावण सेना' यह बरदाश्त नहीं कर सकती कि उनके काले कारनामों, दैनिक अत्याचारों, और बढ़ते भ्रष्टाचारों का परदा फाश करने का कोई साहस करे। या त्रसित और आतङ्कित जनता के चीत्कारों को कोई पत्र प्रकाशित करें। वर्तमान कांग्रेसी सरकार के सामने उसके अत्याचारों को अत्याचार कहना विद्रोह है और ऐसे विद्रोह को कुचलने के लिए उनके पास गन्दे और अत्याचारी कानून हैं। अपने हिटलरी अधिकारों को प्रयोग करके चिनगारी के जन प्रतिनिधित्व के अपराध पर चिनगारी के रामपुर प्रवेश पर पाबन्दी लगादी गई है। जिसका अर्थ साफ कि रामपुर जिले को वहां की सरकार फौलादी सलाखों का बन्द पिंजरा देखना चाहती है। नवाबशाही के जमाने में जो न हुआ पंत सरकार के जमाने में वही करने की अधिकारियों ने कसम खाली है। वे नहीं चाहते कि पिस्ती उनके सामने मुंह खोल सके। चिनगारी पर पाबन्दी लगा कर क्या पीड़ित जन समुदाय को सदा सर्वदा के लिए भेड़ बकरियों की तरह काटते छांटते रहने का स्वप्न देख लिया है।

जनतन्त्र की दुहाई देने वाली सरकार क्या इस प्रकार का प्रतिबन्ध लगाना उचित समझती है। गणतन्त्र में बोलने और लिखने की स्वतन्त्रता रहती है। किन्तु जबकि यह सरकार अन्य नागरिक अधिकारों के साथ साथ इन मौलिक अधिकारों का भी खून करने पर तुल गई है तो अच्छा हो कि गणतन्त्र का बोर्ड अपने सीने से उतार कर फेंक दे। हम सरकार के इस हिटलरी आदेश की घोर निन्दा करते हैं और इस अप्रजातान्त्रिक और अन्याय पूर्ण आदेश को वापिस लेने की अधिकार पूर्ण जोरदार मांग करते हैं।

बयाने दर्दे दिल पर भी,
गुमां है बंद ज़बानी का।
क़ितमगर सुन नहीं सकता है,
शायद दास्तां अपनी॥

स्मरण रहे कि ३१ दिसम्बर के नवजीवन द्वारा हमें यह समाचार प्राप्त हुआ है। 'नवजीवन' दैनिक पत्र लिखता है 'रामपुर के दैनिक उर्दू पत्र 'नाजीम' ने खबर दी है कि बिजनौर से प्रकाशित होने वाले सोशलिस्ट पत्र 'चिनगारी' का रामपुर जिले में प्रवेश रोक दिया गया है।